मेहनतकशों का पैग़ाम
Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

नेट पर उपलब्ध :
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 R.N.I. No. 66400/97

कुदरत के वरदान को शासकों ने बनाया अभिशाप 3
नरेन्द्र मोदी : 'दिल्ली में आया तो हिटलर बन जायेगा' 4
हमारे काम के नहीं, तो गांव में क्यों रहें? 6
नगर निगम का करोबार जाना–माना अवैध निर्माण बनवाना, गिरवाना, कमाना 8
आई.ए.एस. अफ़सरों को चुभता है डाक्टरों का वेतन

वर्ष 26 अंक 16 फरीदाबाद, सोमवार, 1-15 जुलाई 2013 फोन : - 9999595632 सहयोग राशि 2 रुपया

उत्तराखंड की विनाशलीला मनुष्य-निर्मित

अपराधी सज़ा-ए मौत के हकदार

दिल्ली, मज़दूर मोर्चा

क्या रमेश पोखरियाल निशंक, भुवन चन्द्र खंडूरी और विजय बहुगुणा को अब भी जेल से बाहर होना चाहिये? क्या इनका साथ मनमोहन सिंह को भी जेल की उसी कोठरी में नहीं देना चाहिये?

उत्तराखंड में भारी वर्षा के परिणामस्वरूप हुए व्यापक भू-स्खलन से दसियों हज़ार मौतें हो चुकी हैं; लाखों यात्री एवं स्थानीय निवासी जगह-जगह दिनों-हफ़्तों फंसे पड़े जैसे-तैसे जीवन बचाने में संघर्षरत हैं; निजी एवं सार्वजनिक सम्पत्ति का लाखों करोड़ बह चुका है; पूरी तरह तबाह हो चुके परिवहन को वापस पटरी पर लाने में महीनों और वर्षों लगने जा रहे हैं; रोज़ाना का जीवन वापस आने में लगने वाली भौतिक कीमत तो फ़िर भी कुछ वर्षों में अदा हो जायेगी पर भावात्मक एवं मनोवैज्ञानिक घाव तो भरने में पीढियां लगेगी।

युद्धों आतंकी हमलों, अकालों, भूकम्पों और सुनामियों तक में जान-माल का ऐसा भारी नुकसान नहीं होता। उत्तराखंड का नुकसान पूरी तरह वर्तमान मुख्यमंत्री बहुगुणा और पूर्व मुख्यन्त्रियों निशंक एवं खंडूरी की विनाशकारी कारस्तानियों का सीधा नतीजा है। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह केन्द्र सरकार के आपदा नियामक प्राधिकरण के मुखिया हैं। इस नाते उन पर सीधी जवाबदेयी बनती थी कि वे इस विनाश को लाने वाले मुनाफ़ाखोरों पर रोक-थाम लगाते। मज़दूर मोर्चा के 1-15 जून 2013 अंक में बहुगुणा, खंडूर, निशंक की ऐसी कारस्तानियों का विस्तृत विवरण दिया गया था।

शेष पेज 2 पर

अपराध

उत्तराखंड का विनाश

अपराधी

रमेश पोखरियाल निशंक, भुवन चन्द्र खंडूरी, विजय बहुगुणा व मनमोहन सिंह

अस्पताल में भी श्रम मंत्री की नौटंकी ही

फ़रीदाबाद (म.मो.) अपने आप को सरकारी प्रेस का पूर्व श्रमिक बता कर श्रमिकों को बरगलाने व उनका शोषण करने व कराने में जुटे श्रम मंत्री शिवचरण लाल शर्मा जनता को बरगलाने के लिये प्राय: तरह-तरह की नौटंकी करते रहते हैं। ऐसी ही एक नाटकबाज़ी इन्होंने गत पखवाड़े तीन नवम्बर के ई एस आई अस्पताल में करी।

एक सुबह यकायक अस्पताल में पहुंच गये। वहां रोज़मर्रा की तरह श्रमिक-मरीज़ों की लम्बी-लम्बी कतारें हर कमरे एवं खिड़की पर लगी थी। विदित है कि ये कतारें कई बरसों से यूं ही लगती आ रही हैं। सफाई का हाल भी हमेशा की तरह बेहाल था। इन्हीं बातों को लेकर मन्त्री जी ने मेडिकल सुपरिंटेंडेंट (एम एस) सहित सभी डाक्टरों को फटकारना शुरू कर दिया। डाक्टरों की हाजरी के बारे में उन्होंने पूछा तो बताया गया कि 6 डाक्टर अपनी पहले से मंजूरशुदा छुट्टियों पर चल रहे हैं। छुट्टी पर गये इन डाक्टरों को मन्त्री जी ने गैरहाजिर मान कर उनके विरूद्ध कार्यवाही की भभकी मारी। मरीजों की लम्बी कतारों तथा सफ़ाई की दुर्दशा के लिये भी उन्होंने डाक्टरों को खूब फटकारते हुए उन्हें सुधारने की चेतावनी दी।

'मज़दूर मोर्चा' के पाठक भली भांति परिचित हैं कि शहर के दोनों ईएसआई अस्पतालों व तमाम डिसपेंसरियों में स्टाफ़ की भारी कमी हैं। डाक्टर व अन्य स्टाफ़ जरूरत का एक चौथाई भी नहीं है।

इसके अलावा उन्होंने एम एस को कहा कि मरीज़ों के बेहतर इलाज के लिये उन्हें मेट्रो आदि प्राइवेट अस्पतालों में रेफर किया करें। जवाब में एम एस ने कहा कि उन्हें इसका पूरा अधिकार नहीं है, इसका नियन्त्रण ईएसआई कार्पोरेशन ने अपने हाथ में रखा है। इस पर मन्त्री ने कहा कि वे खुद सरकार हैं और वे आदेश देते है कि रेफ़र किया करें। विदित है कि ऐसी 'सरकार' की ईएसआई कार्पोरेशन रत्ती भर भी परवाह नहीं करती। बेशक यह बात मन्त्री को भी पता है, अपनी औकात जानते हुए भी मन्त्री द्वारा इस तरह की लफ़्फ़ाजी का एकमात्र उद्देश्य वहां खड़ी मरीज़ों की भीड़ को यह जाताना था कि वह उनका कितना बड़ा हितैषी है।

'मज़दूर मोर्चा' के पाठक भली भांति परिचित हैं कि शहर के दोनों ईएसआई अस्पतालों व तमाम डिसपेंसरियों में स्टाफ़ की भारी कमी हैं। डाक्टर व अन्य स्टाफ़ जरूरत का एक चौथाई भी नहीं है। 25 साल पहले इसी अस्पताल में 60 से 70 डाक्टर व सैंकड़ों नर्सें तथा पर्याप्त मात्रा में अन्य स्टाफ़ होता था। लेकिन आज इस अस्पताल में मात्र 18 डाक्टर व चन्द नर्सें हैं। सफ़ाई कर्मचारी व अन्य स्टाफ़ काम के लिहाज से एक चौथाई भी नहीं है। विदित है कि तमाम तरह के स्टाफ़ की भर्ती व आवश्यक साज़ो-सामान की खरीद का जिम्मा हरियाणा सरकार के श्रम विभाग का है, जिसके शर्मा जी खुद मन्त्री हैं।

शेष पेज 2 पर

ख़बर दार

मोदी और मनमोहन : असमान दिखते रोगी पर समान रूप से रोग हैं

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

देखने में दोनों एक दूसरे से पूरी तरह भिन्न नज़र आते हैं। पर दोनों में समानतायें भी गहरी हैं। नरेन्द्र मोदी और मनमोहन सिंह। प्रधानमंत्री और प्रधानमंत्री पद के सबल दावेदार।

देखने में लगता है कि मोदी बहुत जल्दबाज़ी में हैं प्रधानमंत्री बनने की। देखने में लगता है वे सभी को, विपक्षियों-दोस्तों सहयोगियों को ज़मीदोज़ करने वाले बुलडोज़र हैं। जबकि मनमोहन सिंह हमेशा सोनिया गांधी की कृपा तले दबे प्रधानमंत्री दिखना चाहते हैं।-वे कभी जल्दी में नज़र नहीं आते। कोई सोच भी नहीं सकता कि दोस्तों और सहयोगियों को तो दूर वे कभी विपक्षियों को भी किनारे लगाना चाहते होंगे।

दोनों की दाढ़ी और ट्रेडमार्क पहनावा भी अलग हैं। दोनों के बोलने व चलने का अंदाज भी एक दूसरे से सर्वथा विपरीत है। यह भी दिखता ही है कि एक धर्म-निरपेक्षता की राजनीति कर रहा है और दूसरा साम्प्रदायिकता की। एक को अन्तर्राष्ट्रीय जगत ने पूरी तरह स्वीकारा हुआ है और दूसरे को अभी नकार रखा है। एक जन आधारित नेता है और दूसरा कुर्सी-आधारित।

ये दिखनेवाली असमानताएं हैं। लेकिन दोनों में वास्तविक समानताएं भी कम नहीं। दोनों को कुर्सी इतनी प्रिय है कि उसे रखने के लिये वे किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। प्रधानमंत्री के रुप में मनमोहन सिंह ने भ्रष्टाचारी खुली लूट एवं घोटलों को अपने आपराधिक प्रश्रय में जैसे चलने दिया है उसकी कम से कम भारतीय राजनीति में कोई और मिसाल नहीं मिलती। इसी तर्ज पर बतौर मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात में साम्प्रदायिक हत्याचार को अपने खुले संरक्षण में एक अभूतपूर्व चुनावी हथियार में बदल दिया। दोनों को अपने अपराधों के लिये आजीवन जेल में रहना चाहिये था पर दोनों सत्ता-सुख भोगते जा रहे हैं।

ये दिखनेवाली असमानताएं हैं। लेकिन दोनों में वास्तविक समानताएं भी कम नहीं। दोनों को कुर्सी इतनी प्रिय है कि उसे रखने के लिये वे किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। प्रधानमंत्री के रूप में मनमोहन सिंह ने भ्रष्टाचारी खुली लूट एवं घोटलों को अपने आपराधिक प्रश्रय में जैसे चलने दिया है उसकी कम से कम भारतीय राजनीति में कोई और मिसाल नहीं मिलती।

इसी तर्ज पर बतौर मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात में साम्प्रदायिक हत्याचार को अपने खुले संरक्षण में एक अभूतपूर्व चुनावी हथियार में बदल दिया। दोनों को अपने अपराधों के लिये आजीवन जेल में रहना चाहिये था पर दोनों सत्ता-सुख भोगते जा रहे हैं।

मनमोहन सिंह किसकी कठपुतली हैं, सभी को पता है। सोनिया गांधी के इशारे के बिना प्रधानमंत्री कार्यालय में एक काग़ज़ भी नहीं हिल सकता। नरेन्द्र मोदी को लेकर भी संदेह नहीं रहना चाहिये। अब तो बिल्कुल भी नहीं जब लालकृष्ण आडवाणी को भाजपा ने दूध से मक्खी की तरह निकाल फेंका है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को नरेन्द्र मोदी से ज़्यादा रास आने वाली कठपुतली नहीं मिल सकती थी।

यह समीकरण ठीक उसी तरह है जैसे कि सोनिया गांधी को अपना निर्बाध-वर्चस्व कायम रखने के लिये मनमोहन सिंह से ज़्यादा सुविधाजनक छवि वाली कठपुतली नहीं मिल सकती थी। नरेन्द्र मोदी भी संघ के एजेंडे पर उसी तरह वफ़ादारी का लबादा ओढे चल रहे हैं जैसे मनमोहन सिंह 10 जनपद के एजेंडे पर चलते हैं।

शेष पेज 2 पर